राग व द्वेष कर्म के बीज : युवाचार्य महाश्रमण

न्यूज. लाडनूं 14 जुलाई. बुधवार को जैन विश्वभारती स्थित सुधर्मा सभा में प्रवचन सभा हुई। प्रवचन सभा में उपस्थित श्रावकजन को सम्बोधित करते हुए युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि प्राणी अपने जीवन में कर्म का बंध करता रहता है। कर्म दो प्रकार के होते हैं एक पाप कर्म व दूसरा पुण्य कर्म। उन्होंने कहा कि जैन धर्म में आश्रव के द्वारा कर्म को समझाया गया है। आश्रव का एक अंग है क्रिया। पाप कर्म के लिए 5 प्रकार की क्रियाऐं हैं जिनसे यदि बचा जाए तो पाप के बंध नहीं होते हैं। जिनमें पहली वह क्रिया है जिसमें हम अपने शरीर के द्वारा किसी को नुकसान पहुंचते हैं, दूसरी में हम अपने शरीर को शस्त्र इत्यादि चलाकर किसी का नुकसान करते हैं, तीसरी क्रिया अपने मन में राग-द्वेष की भावना से किसी का अहित करते हैं, चौथी क्रिया में किसी दूसरे को कष्ट देना तथा पांचवी क्रिया वह है जिससे हम शरीर की हत्या करते हैं वह चाहे दूसरे की हत्या करना हो अथवा आत्महत्या। इन पांचों क्रियाओं के द्वारा व्यक्ति पाप का भागीदार बनता है। युवाचार्य ने कहा कि हमारे मन में कई प्रकार के भाव उत्पन्न होते हैं। उनमें राग-द्वेश कर्म क बीज हैं। उन्होंने साधकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि साधक को समता में रमण करना चाहिए। किसी भी पदार्थ के प्रति राग-द्वेष के भाव न आये इसके लिए समता का अभ्यास करें। महाश्रमण ने साधकों को समस्या एवं दु:ख को परिभाषित करते हुए कहा कि समस्या अलग घटक है तथा सुख-दु:ख अलग घटक हैं। समस्याओं के निदान के बारे में सोचना चाहिए। समस्या आने पर दु:खी न हों। मानसिक रूप से शांत रहें तो कोई भी समस्या व्यक्ति को दु:खी नहीं कर सकती। इसके लिए प्रेक्षाध्यान के अनुप्रक्षा प्रयोग करें। अनुप्रेक्षा में साधक यह प्रयोग करें कि केवल मेरी आत्मा शाश्वत है शेष संसार के सभ्ज्ञी सम्बन्ध संयोग हैं तथा वियोग में बदलने वाले हैं। उन्होंने कहा कि साधु वही हैं जो सम्बन्धों से ऊपर उठ जाते हैं। गृहस्थ भी इसे समझें कि ये संयोग सम्बन्ध स्थायी नहीं है। संसार की इस रीति-नीति का ज्ञान यदि सभी कर लें तो पाप के बंध से बचा जा सकता है।

चेहरे की नहीं चरित्र की सुंदरता आवश्यक : युवाचार्य महाश्रमण

न्यूज. लाडनूं 14 जुलाई. आकृति एवं संहनन शरीर के मुख्य अवयव हैं लेकिन आकृति से महत्वपूर्ण है व्यवहार। यह विचार युवाचार्य ने मंगलवार को जैन विश्वभारती स्थित सुधर्मा सभा में प्रवचन करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि शरीर के अवयव यदि सही हों तो व्यक्ति महानता की ओर अग्रसर होता है और अवयव यदि गलत हों तो व्यक्ति पागलपन का शिकार होता है। इसलिए शारिरीक सरंचना का महत्वपूर्ण स्थान है। युवाचार्य ने व्यक्ति के व्यवहार की महता को

समझाते हुए कहा कि यदि चेहरा सही नहीं है लेकिन व्यवहार कुशल है तो चेहरे की कमी को ढ़का जा सकता है। लेकिन चेहरा सुंदर है व्यवहार सुंदर नहीं है तो व्यक्ति का चेहरा उसकी कमियों को ढ़कने में सक्षम नहीं है। महाश्रमण ने कहा कि पण्णवणा के अनुसार शरीर पांच प्रकार के हैं। लेकिन स्थूल शरीर से व्यक्ति की पहचान मात्र होती है। व्यक्ति की वास्तविक पहचान उसके गुणों से होती है। सौन्दर्य का मूल्य कम होता है तथा गुणवता, बुद्धिमता एवं गुणसम्पन्नता का मूल्य अधिक होता है। उन्होनें कहा आकृति एवं सौन्दर्य से कोई व्यक्ति महान नहीं होता प्रकृति से व्यक्ति का चरित्र निर्माण होता है। महाश्रमण ने कहा कि बुद्धिमता के साथ यदि व्यक्ति विवेकशील एवं मधुर स्वभाव का धनी होता है तो वह महानता को प्राप्त करता है। उन्होंने व्यक्ति के व्यवहार के लिए मोहनीय कर्म को जिम्मेदार बताते हुए कहा कि यदि मोहनीय कर्म कम हैं तो व्यवहार मधूर होगा वहीं मोहनीय कर्म अधिक हैं तो व्यवहार मलिन होगा। इसी तरह युवाचार्य महाश्रमण ने व्यवहार को धर्म से जोड़ते हुए कहा कि लक्ष्मी चंचल है, प्राण भी चंचल है। जीवन, जवानी व संसार भी चंचल है केवल धर्म अविचल है। व्यक्ति को चाहिए कि धर्म का आचरण करते हुए अपने मोहनीय कर्मों को कम करे जिससे उसके व्यक्तित्व का निर्माण हो सके। उन्होंने कहा कि धर्म के विपरीत चलने से आदमी धन, काम, हवस एवं सता सुख पाने के लिए अपराध एवं हिंसा करता है। जिससे वह अनैतिक पथ पर बढ़ता है तथा उसका चरित्र खराब हो जाता है।